ऑडियो विडियो रिकॉर्डिंग एवं विवरण पत्र

फोल्डर नं:- 02
ट्रैक नं:- ZOOM0033.WAV
ट्रैक समयावधि:- 01:00:13
कलाकार का नाम:- सुभान खाँ
पिता का नाम:- खमेखाँ
पता:- गाँव- बड़नावा चारणान् तेह- पचपदरा जिला- बाड़मेर
सहायक कलाकार:-
विडियो रिकॉर्डिंग समय:-
विषय:- कथा (सोगागीड़ विजयटाक)
विशेष विवरण
दिनांक:- 11/06/2021
स्थान:- बड़नावा चारणान्
गायन/वादन:-

वर्णन :- यह कथा सोमा गौड़ और विजैटाक नामक दो व्यक्तियों की है जो कुशल चोर होते हैं। एक दिन वे चोरी के लिए निकलते हैं जाते-जाते रात का समय है वे जंगल में हैं और पूरे जंगल में शांती है लेकिन एक पक्षी मादा अपने अण्डों के पास घूम-कर पहरा दे रहा है और वह इतना चतुर पक्षी है जरा सी आहट सुनते ही चिल्लाने लगता है। सोमागौड़ विजयटाक से कहता है कि अगर हमने उस चतुर पक्षी के अण्डे चुरा लिए उसको मालूम भी न पड़ता है तो हम चोरी करने से कामयाब हो जाएँगे। तो विजयराक इस तराह से चोरी करता है कि उस पक्षी को भी पता नहीं चलता है तथा सोमागौड़ विजयटाक के जेब से अण्डे निकाल देता है और उसको खबर तक नहीं होने देता है। अब विजयटाक उसके पास आकर अपने जेब में हाथ डालता तो जेब खाली है। और सोमागौड़ अपने जेब से अण्डे निकालता है तो वह कहता है कि ये आपके पास कैसे आए तो सोमागौड़ कहता है कि तुमने उस पक्षी से चुराए मैंने आप से चुरा लिए। इसप्रकार विजयराक कहता है कि हम चोरी में कामयाब तो हो जाएगें लेकिन चोरी का माल कोई और ले जाएगा। चोरी बीच मोर पड़ जाएगी। इस तराह वे एक शहर में जाता है और एक मन्दिर के ऊपर से सोने के कलस चुराते हैं तो उस शहर में एक कुशल चोर सुनार उसको पता चल जाता है कि आज मन्दिर के कलश कोई चुरा रहा है। सोमागौड़ और विजयटाक उन कलसों को एक लास की तराह खाट पर रख राम नाम सत्य है! करते करते शहर से बहार निकल जाते हैं तथा चोर सुनार उससे पहले पण्डित बनकर शहर से बाहर निकल जाता है और एक कबरीस्तान में जाकर सो जाता है। वे उस सोने के कलशों को एक कबरीस्तान में दफना देते हैं और यह जानने के लिए सभी कबरों में भाला मारकर देखते हैं कि कोई आदमी तो नहीं छुपा। तथा एक भाला उस सुनार के के पाँव में लग जाता है लेकिन वहा उन्हें पता नहीं चलने देता है। विजय टाक और सोमागौड़

के शहर में जाते ही वहां उस सोने के कलशों के अपने घर ले जाता है। कई दिन बाद वे वापिस उसी कब्रीस्तान में आकर देखते हैं तो वहां सोना नहीं है। अब वे दोनों उस चोर को ढूढने उसी शहर में जाते हैं और हल्दी और तेल की दुकान लगाते हैं जो भी वहां से हल्दी और तेल खरीदता है तो उसे वे पूछते कि तुम यह किसलिए खरीद रहे हो तो कोई कहता है सब्जी के लिए कोई कुछ और कहता है। एक दिन उसी सुनार की लड़की वहां तेल और हल्दी लेने आती है तो वह कहती है कि मेरे पिता के पाँव मे घाव लगा हुआ है उस पर लगाने के लिए तथा उन्हें पता लग जाता है। और में जब सुनार कुछ बना रहा होता है तो वे तलवारे लेकर उसके पास जाकर उसे मारने की धमकी देते है तो वह सारा सोना बता देता है और वह सुनार कहता है कि मैंने इस सोने से सिर्फ दो गजरे ही बनाए है तो वे गजरे ले लेते है और उसे भी कुछ सोना देते है। और वे सोना लेकर दोनो आपस में बांट लेते है और एक एक गजरा लेकर अपनी पत्नीयो को लेजाकर दे देते है। तो विजयटाक की औरत उससे रुठ जाती है और कहती या तो मुझे एक एसा ही गजरा लाकर दो नहीं तो हमारा कोई रिस्ता नहीं। अब वह ना तो उस सुनार के पास जा सकता और सोगागौड़ के घर से भी वह चोरी नहीं कर सकता। लेकिन फिर भी अपने दोस्त सोगागौड़ के घर जाता है और उसकी औरत के हाथ से गजरा निकालकर अपनी औरत को लाकर दे देता है और सोगागौड़ को पता चल जाता है कि मेरे घर विजयटाक के अलावा कोई भी चोरी नहीं कर सकता है। एक दिन सोगागौड़ आधीरात को जाता है और उसकी औरत को उठाकर ले जाता है और जाकर लोग पूछते तो वह कहता कि यह मेरी साली है अपने बहिन से मिलने आयी है। विजयटाक को पता ही होता है कि एस सोगागौड़ ही कर सकता है तथा कुछ दिन बाद वह सोगागौड़ के गाँव मे जाता है और एक दिन की मरी हुई औरत की लाश को सोगागौड़ के पास सुला कर रात मे जला देता है तथा अपनी पत्नी और सोगागौड़ की पत्नी

को भी लेकर अपने घर चला जाता है। तथा सोंगागोड़ समझता है कि उसकी पत्नी जलकर मर गई तो उसके पीछे खर्च करता है तथा उनकी अस्थियों को गंगा के घाट विसर्जित करके वापिस आता है। विजयटाक उसकी पत्नी को बहिन बनाकर रखता है। दो तीन महीने बीत जाते है तथा एक दिन विजयटाक सोंगागोड़ के घर जाता है और कहता है कि मेरी एक कुवारी बहिन है अगर तुम कुछ लोगो को लेकर माँगे के लिए आते हो तो अपनी बहिन की शादी तुम से करवा दूँ। तो सोंगागोड़ कुछ मुखिया को लेकर जाते है तो विजयटाक उसे उसी की पत्नी को अपनी बेटी करके शादी धूमधाम से करके विदा करके जब रात मे सोंगागोड़ घूँगट हटाता है उसकी ही पत्नी होती है तो वह पूछता है कि तुम तो मर चुकी थी तो वह मैं नही मुझे तो विजयटाक अपनी बेटी बनाकर अपने घर लाया था और बेटी की तरहा ही विदा कर दी तो वह सुबह दोनो मिलकर एक साथ अमल लेते है तथा अपने अपने घर चले जाते है।